Sarv Bhasha Trust Presented

www.sarvbhashatrust.com

SARV BHASHA BULLETIN
सर्व भाषा बुलेटिन

16 Jan. to 31 Jan. 2019

Year : 2, Issue : 8

इस अंक में ....

- आलेख 2
- विविध 3
- संपादकीय 4

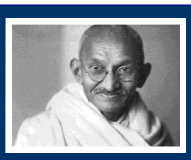

शहीद दिवस

भारत में कई तिथियाँ शहीद दिवस (सर्वोदय दिवस) के रूप में मनायी जातीं हैं, जिनमें मुख्य हैं- 30 जनवरी, 23 मार्च, 21 अक्टूबर, 17 नवम्बर तथा 19 नवम्बर। 30 जनवरी 1948 को महात्मा गांधी की हत्या हुई थी। शहीद दिवस के दिन भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधान मंत्री आदि दिल्ली के राजघाट पर बापू की समाधि पर फूलों की माला चढ़ाकर व सैन्य बलों द्वारा सलामी देकर श्रद्धाजलि दी जाती है। इसके उपरांत राष्ट्रपित महात्मा गांधी और अन्य शहीदों की याद में 2 मिनट का मौन धारण किया जता है।

♦♦

ऑनलाइन फार्मेसी का मकड़ जाल

भारत में आज कल ये ऑनलाइन फ़ार्मेसी का ट्रेंड चल रहा है, हम ओर हमारे केमिस्ट भाई अपना अपना काम पूर्ण ईमानदारी और मेहनत के साथ करते हैं फिर भी सभी का सिर्फ़ दाल रोटी का ही निर्वाह होता है। ऐसे में सोचने वाली बात यह है कि ऑनलाइन फ़ार्मेसी के द्वारा घर पर ही कम मूल्य में दवाइयों का पहुँचना एक चमत्कार मालूम होता है। शायद हम खुद दवाइयाँ न बेचते तो हम भी यही तरीका अपनाते। इतना कुछ कम कीमत पर घर बैठे मिले तो सोचना क्या।

सोचना चाहिए सभी बातों को। आम जनता को इतना जागरूक तो होना ही होगा कि सब सोच विचार कर करें। दवाइयाँ कोई मॉल में बिकने वाला सामान नहीं है जो एक्सपायरी डेट क्लोज होने पर एक के साथ एक चिपका कर बेच दिया जाए। चलो ये कह सकते हैं की सीधा कंपनी से मँगवाया तो सस्ता पड़ा, हम कम दाम पर या ज्यादा डिस्काउंट में बेच देते हैं। लेकिन कुछ दवाइयाँ तो कंपनी से ही कम डिस्काउंट पर आती हैं उन पर कैसे 30,40,50 % डिस्काउंट कर सकते हैं। क्या ये लोग अपनी जेब से पैसा लगा कर लोगों को घर-घर दवाइयाँ पहुँचा रहे हैं? क्या ये पॉसिबल है? आपने सोचा है? जो इतनी नकली दवाइयाँ पकड़ी जाती हैं, बनती हैं और पैक होती हैं वे कहीं तो जाती ही होंगी। चलिए माना कि आप कहेंगे कि ये कम्पनी से ही सामान मँगवाते हैं। अव्वल तो सारे ऑनलाइन दवाई बेचने वाले डायरेक्ट कंपनी से नहीं मँगवा सकते। दूसरे आज आप लालच या आराम के कारण इन लोगों से घर ही में दवाई मंगवाकर इनका कारोबार बढ़ा दें तो आगे आने वाली जनरेशन का सोचा है? सभी दवाएँ जो प्रिस्क्रिप्शन के बिना प्रतिबंधित है नींद आदि की जो हमारे केमिस्ट अपने नुकसान की परवाह करे बिना दवाई नहीं देते हैं उन्हें आराम से मिल जाएगी। फिर तो इन दवाओं की आदतें उन्हें कम उम्र से पढ़ जाएँगी, आगे आप समझ सकते हैं।

आज जमाना बदल रहा है, छोटी दुकानों से बड़े मॉल और अब तो सभी चीजों की ऑनलाइन शॉपिंग ठीक है, समय ना होने पर ये सब सही लगता है लेकिन दवाएँ हैं भाई, घर का बाकी सामान नहीं है कि कैसे भी, कहीं से भी, मँगवा लिया। जो हमें जीवन देता है उन दवाइयों के साथ तो ऐसा मत करो। जैसे हम अच्छा हॉस्पिटल और

अच्छा डॉक्टर ढूँढते हैं वैसे ही दवाइयाँ भी हर जगह से नहीं मँगवाई जा सकती। सभी लोगों के घर के पास ही दवा की दुकान होती है और सभी केमिस्ट भाई मि. लनसार होते हैं। अपने ग्राहकों के सुख-दुःख को समझते हैं। इनमे आपस में रिश्ता भाईचारा भी हो जाता है ओर इनका प्रोफ़ेशन तो ऐसा है ही। ऐसे में जरूरत पड़ने पर या बुजुर्गों को तो ये भी घर पर दवाइयाँ उपलब्ध करा देते हैं। इस लिए ऑनलाइन दवाओं के दुष्परिणामों को समझते हुए सभी लोगों व सरकार को हम सभी दवा विक्रेताओं का साथ देना चाहिए।

हम और सभी केमिस्ट भाई समाज की सेवा में हमेशा से सक्रिय हैं। समय तो बदलता रहता है लेकिन कठिन परिस्थितियाँ कुछ सिखा कर जाती हैं। हमें यकीन है हम जीतेंगे, मिल जुलकर इस परिस्थिति से लड़ेंगे लेकिन सीख लेंगे की हमें आगे हमेशा मिलकर चलना है। सबका एक ही उद्देश्य है समाज सेवा व मिल कर रहना इसमें ही हमारी जीत है।

♦♦

• पारुल गर्ग

ज़रूरत एक नई पहल की

मधु त्यागी

गुरुग्राम
(हरियाणा)

भाषा : हिंदी
(आलेख)

वर्तमान समय में माता-पिता के लिए अपने बच्चों को संभालना और समझाना बहुत मुश्किल हो गया है क्योंकि आज के इस गतिशील जीवन में माता-पिता के पास अपने बच्चों के लिए इतना समय ही नहीं है कि वे उन्हें सही और गलत के बीच का अंतर बताएँ, सही राह दिखाएँ। वर्तमान समय में बच्चों का सबसे बड़ा मार्गदर्शक है इंटरनेट और यह बात जगजाहिर है कि इंटरनेट बच्चों का मार्गदर्शन नहीं कर सकता, इंटरनेट केवल जानकारी दे सकता है। क्या सही है क्या गलत, यह तो सिर्फ़ माता-पिता ही बता सकते हैं और आज की इस भागदौड़ भरी जिंदगी में उनके पास इतना समय ही नहीं है कि वे बच्चों का मार्गदर्शन कर सकें। सभी एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में शामिल हैं, सभी अपने बच्चों को, अपने परिचितों के बच्चों से आगे देखना चाहते हैं इसलिए स्कूल से आने के बाद जो समय उन्हें बच्चों के साथ बैठकर उन्हें पढ़ाने में, पढ़ाते-पढ़ाते रोज़मर्रा की बातें करते हुए अपने लाड़लों के साथ बिताना चाहिए वह ट्यूशन के नाम कर देते हैं और ट्यूशन से जो समय बचता है वह हॉबी क्लासेज़ की भेंट चढ़ जाता है। इस सबके बाद बच्चों के पास इतना समय ही नहीं बचता कि वे अपने बचपन को जी भरकर जी पाएँ अपने भविष्य के लिए बचपन की मीठी यादें सँजो पाएँ। 10-11 साल का होने तक बच्चों को बच्चा समझकर उनकी सारी इच्छाएँ पूरी की जाती हैं, बच्चा समझकर उनकी गलतियों को हँसकर टाल दिया जाता है, उनके गलती करने पर स्वयं माफी माँगी जाती है और उन्हें यह भरोसा दिलाया जाता है कि माता-पिता हर समय उनके साथ हैं। 12 साल का होते ही अचानक ये अहसास दिलाना शुरू कर देते हैं कि अब वह बड़ा हो गया है, उसे बड़ों की तरह व्यवहार करना चाहिए और विडंबना यह है कि जब बेचारा बच्चा बड़ों की तरह व्यवहार करता है तब उसे समझाया जाता है कि अभी वह उतना बड़ा नहीं हुआ है, बच्चा है बच्चों की तरह व्यवहार करे। बेचारा बच्चा असमंजस में पड़ जाता है, वह समझ ही नहीं पाता कि वह छोटा है या बड़ा......? बचपन से ही बच्चों से कहा जाता है - यह मत करो, वह करो। वह मत करो, यह करो। क्यों करो और क्यों नहीं करो ? यह नहीं बताया जाता। माता-पिता की सारी परेशानियाँ, समस्याएँ यहीं से शुरू होती हैं क्योंकि वे बच्चों को सही- गलत की स्वयं पहचान करने का नज़रिया नहीं देते अपितु सही और गलत थाली में परोसकर उनके सामने रख देते हैं। बच्चे फ़ैसला ही नहीं कर पाते कि उनके लिए क्या सही है क्या गलत? बढ़ते बच्चे उम्र के उस पड़ाव पर पहुँचते हैं जब उन्हें यह अहसास होता है कि अब वे बड़े हो रहे हैं, उनकी भी अपनी एक जिंदगी है, व्यक्तिगत विचार हैं, सीमाएँ हैं। वह अपने व्यक्तिगत निर्णय स्वयं लेना चाहते हैं, चाहते हैं, अपनी व्यक्तिगत सीमाओं में किसी की दखल अंदाजी नहीं चाहते, यहाँ तक कि अपने व्यक्तिगत मामलों में अपने माता-पिता की दखल अंदाजी बरदाश्त नहीं करते। यहीं से आरंभ होता है माता पिता और बच्चों के विचारों का टकराव।

"अभिभावक अपने समय के हिसाब से बच्चों की परवरिश करना चाहते हैं पर वे भूल जाते हैं कि उनके समय में और वर्तमान समय में ज़मीन-आसमान का अंतर है।"

इस सबका खामियाज़ा माता-पिता को ही नहीं, बच्चों को भी भुगतना पड़ता है। अभिभावक अपने समय के हिसाब से बच्चों की परवरिश करना चाहते हैं पर वे भूल जाते हैं कि उनके समय में और वर्तमान समय में ज़मीन-आसमान का अंतर है। वास्तव में आज के बच्चों के मार्गदर्शक माता-पिता नहीं, टी. वी. और इंटरनेट हैं, अपने माता-पिता से ज़्यादा टी. वी. और इंटरनेट की सुनते हैं, इन्हीं के बताए रास्ते पर चलते हैं, इन्हें ही अपना सही, सच्चा दोस्त और मार्गदर्शक मानते हैं। माता-पिता अपनी सोच, अपना रास्ता बदलना नहीं चाहते, अपने बच्चों के कदम से कदम मिलाकर चलने से कतराते हैं और दूसरी तरफ़ बच्चे पीछे मुड़कर देखना भी नहीं चाहते। परिणाम यह है कि माता पिता और बच्चों के बीच का फ़ासला बढ़ता ही जा रहा है। अभिभावकों को यह समझना होगा कि इक्कीसवीं सदी के बच्चे माता-पिता के साथ चलने के लिए पीछे नहीं मुड़ेंगे अपितु अभिभावकों को ही आगे बढ़कर अपने बच्चों के कदम से कदम मिलाने के लिए पहल करनी होगी। अगर आज सही समय पर बच्चों के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए अपने कदम नहीं बढ़ाए तो बहुत देर हो जाएगी और अभिभावकों व बच्चों के बीच की खाई बढ़ती चली जाएगी। आज समय की माँग और ज़रूरत यही है कि अभिभावक आगे आएँ, बच्चों की ज़रूरत समझें और उनके कदम के साथ कदम मिलाकर चलें।

♦♦

प्रवीण बंगवाल

हंसराज माडल स्कूल
पंजाबी बाग
नई दिल्ली

भाषा : हिंदी
(कविता)

मैं भारत हूँ

मैं भारत हूँ, हाँ मैं भारत हूँ।
ऋषि परम्पराओं से, वेदों की ऋचाओं से
शान्ति पाठ की महिमा गाता,
अखण्ड राष्ट्र का अलख जगाता।
मैं भारत हूँ, हाँ मैं भारत हूँ।
मेरा भी एक स्वर्णिम युग था
कहते लोग जिसे वैदिक युग था,
जब राम-कृष्ण भगवान हुए, जन-कल्याण प्रतिमान हुए।
एक मर्यादा प्रचार किए, दूजे गीता का सार दिए,
नहीं था विश्व में शिक्षा का शोर,
बस गुरुकुल का था इस पर जोर
तक्षशिला नालन्दा थे, विश्व हेतु ज्ञान के आलय थे
छात्र विदेशी आया करते शास्त्र-ज्ञान ले जाया करते।
राजनीति या अर्थशास्त्र आयुर्वेद या विमान शास्त्र
अस्त्र, शस्त्र, अणु, परमाणु की, शिक्षा यहाँ दी जाती थी।
घोर तिमिर का नाश कर ज्योति दिखाई जाती थी।
शिष्यता सम्पूर्ण विश्व में मेरी स्वीकारी जाती थी,
सम्पूर्ण धरा पर विश्वगुरु पहचान बताई जाती थी।
विश्व में ज्ञान लुटाने वाला, विश्वगुरु कहलाने वाला
मैं भारत हूँ, हाँ मैं भारत हूँ।
एक बार सब अपने में ही व्यस्त थे,
लाखों मेरे सपने हुए ध्वस्त थे
आक्रांताओं की हुई भरमार थी
मुगलों के बाद ब्रिटिशों की हुई मार थी
हाँ वही समय था ठीक वही समय था
रग रग में क्रान्ति की माँग थी,
अखण्ड राष्ट्र में शान्ति की माँग थी।
उस क्रान्ति का इच्छुक, शान्ति का भिक्षुक
मैं भारत हूँ, हाँ मैं भारत हूँ।
तब मेरी लाज बचाने को, राष्ट्रभक्ति जगाने को
चाणक्य जैसे विद्वान हुए, ऋषि दयानन्द से महान हुए
इनकी प्रेरणा ने जन्म दिया, अनेक वीर जवानों को
मेरे लिए मर मिट सकते थे ऐसे स्वाभिमानों को।
आज़ादी मेरा अधिकार था, देशभक्तों का यह प्यार था
आज़ादी का स्वप्न देखता, स्वाभिमानों की राह देखता
क्या स्त्री क्या पुरुष सब इस आन्दोलन के हिस्सा थे,
सब मुझ पर बीत रही घटना के ही किस्सा थे
खोई धीरता वापस लाता, बलिदानों की अलख जगाता
मैं भारत हूँ, हाँ मैं भारत हूँ।
मुझे याद है सत्तावन की क्रान्ति,
जिसने तोड़ दी थी अंग्रेज़ों की भ्रान्ति
भंग हुई चापलूसों धोखेबाज़ों की शान्ति
मुझे मेरा स्वाभिमान मिलता दिख रहा था
पुनः एकता का सूत्र बनता दिख रहा था
मुझे आवश्यकता थी ऐसे और जवानों की,
जीवन अर्पण कर देने वाले बलिदानों की
फिर भगतसिंह राजगुरु सुखदेव हुए
आज़ाद अशफ़ाक बिस्मिल सब एक हुए
उधर गाँधी सुभाष की बौद्धिक शक्ति थी
इधर जवानों की मर मिटने वाली भक्ति थी।
बौद्धिक शक्ति का भण्डार, अनुपम भक्ति का महासार
मैं भारत हूँ, हाँ मैं भारत हूँ।
इस भक्ति और शक्ति का वह प्रताप था
हर नागरिक अजादी का कर रहा जाप था
जहाँ उन नौजवानों को फाँसी का फरमान था
फाँसी पर लटका वो मेरे लिए बलिदान था
अंग्रेज़ों भारत छोड़ो आन्दोलन तेज़ हुआ
हर विदेशी वस्तु से मुझे परहेज हुआ
अखण्ड राष्ट्र की एकता ने नहीं सहा परतंत्र,
आखिर मैं हुआ स्वतंत्र
परतंत्र नहीं सहने वाला, स्वतंत्र ही रहने वाला
मैं भारत हूँ, हाँ मैं भारत हूँ।

२६ को गणतंत्र दिवस काव्य-संध्या

आगामी २६ जनवरी को 'सर्व भाषा ट्रस्ट' और हर्फ़ प्रकाशन के संयुक्त तत्वावधान में 'गणतंत्र दिवस काव्य-संध्या' का आयोजन हो रहा है।

उक्त कार्यक्रम 'अनुसंधान अपार्टमेंट', द्वारका, सैक्टर - ६ के कॉमन हॉल में श्री अशोक लव की अध्यक्षता में होना सुनिश्चित किया गया है। काव्य संध्या में मुख्य अतिथि के रूप में इलाहाबाद से सामाजिक कार्यकर्ता श्री अजीत सिंह जी रहेंगे। कार्यक्रम में करीब २१ कवि-कवयित्रियों को आमंत्रित किया गया है। उक्त जानकारी जलज कुमार अनुपम ने दी।

केशव मोहन पाण्डेय

लघुकथा एक बेहद कोमल भावों की विधा है। कहा जाता है कि एक भी अतिरिक्त वाक्य या शब्द लघुकथा की सुंदरता बिगाड़ देता हैं। न एक अधिक शब्द और न एक कम, यही लघुकथा का मूल मंत्र है। इस मंत्र के आधार पर कह सकते हैं कि लघुकथा में केवल वही कहा जाता है, जो आवश्यक होती है। दरअसल कीमती धन में से अपने आवश्यकता भर संपदा निकाल लेने का ना लघुकथा है। लघुकथा को अक्सर एक आसान विधा मान लेने की गलती कर ली जाती है, जबकि वास्तविकता बिलकुल इसके विपरीत है।

मुझे लघुकथा लिखने के लिए सर्वप्रथम मित्र देवेंद्र नाथ तिवारी ने प्रेरित किया। उन्हीं की प्रेरणा से मैं लिखने लगा। मैं बेहिचक स्वीकार करता हूँ कि दो-चार साल बाद मुझे लघुकथा के वास्तविक अर्थ का भान हुआ। मैं मानता हूँ कि निश्चय ही लघुकथा लिखना गद्य साहित्य की किसी भी विधा में लिखने से थोड़ा मुश्किल ही होता है। यहाँ शब्द कम होते हैं, लेकिन बात पूरी कहनी होती है। कथन और उद्देश्य भी शीशे की तरह साफ होता है।

हिंदी साहित्य में लघुकथा अब नवीनतम विधा नहीं हिंदी की अन्य सभी विधाओं की तुलना में अधिक लघु-आकार होने के कारण यह समकालीन युवा पाठकों के ज्यादा करीब है और अपनी विध ागत सरोकार की दृष्टि से भी एक पूर्ण विधा के रूप में साहित्य-संसार में प्रतिष्ठित भी है। हिन्दी कहानी के विधिवत जन्म लेने से काफी पहले कई पाश्चात्य विद्वानों के माध्यम से कहानी अपने उत्कृष्टतम स्वरूप को प्राप्त कर चुकी थी। भारतीय भाषाओं में बंगला कहानी भी खुली हवा में अपना परचम लहरा चुकी थी। हिन्दी में परिमार्जित कहानी के रूप में जो रचनाएँ प्रकाश में आई हैं, आमतौर पर सन 1900 ई० के आसपास प्रकाशित हुईं। यहाँ पर हमारा उद्देश्य मात्र इतना बताना है कि हिन्दी लघुकथा की स्थिति इससे एकदम भिन्न है। आज की लघुकथा पर शोध हो रहा है। लघुकथा पर ग्रंथों का लेखन-प्रकाशन हो रहा है।

लघुकथा का मतलब छोटी कहानी से नहीं है, छोटी कहानी लघु कथा होती है जिसमें लघु और कथा के बीच में एक खाली स्थान होता है। लघुकथा शब्द का निर्माण लघु और कथा से मिलकर हुआ है। कहा जा सकता है कि लघुकथा गद्य की एक ऐसी विधा है जो आकार में 'लघु' है और उसमे संपूर्ण कथा तत्त्व उपस्थित हैं। बस, लघुता ही इसकी मुख्य पहचान है। जिस प्रकार उपन्यास खुली आँखों से देखी गई घटनाओं व परिस्थितियों का संग्रह होता है, उसी प्रकार कहानी सू क्ष्मता से देखी गयी किसी घटनाओं का वर्णन होती है।

लघुकथा लिखने के साथ-साथ पढ़ने और सिखने की विधा है। बहुत से लघुकथाकारों को दो-चार, दस लघुकथा लिखने के बाद स्वयं को मठाधीश कहलाने का शौक पकड़ लेता है। इस दौर में भी मैं श्री अशोक लव जैसे वरिष्ठतम लघुकथाकारों को जानता हूँ जिनमें कहीं, किसी प्रकार का दिखावा नहीं है। बस, साहित्य-सेवा की ललक आज भी है। वे निरंतर लिख रहे हैं और नई पौध तैयार कर रहे हैं। ♦♦

मुझे कुछ कहना है ....

रीता मिश्रा

संस्कृति शब्द का अर्थ परिष्करण या परिष्कृत है। यहाँ परिष्करण हमारे संस्कारों का होता है। संस्कृति पर विश्व में कहीं भी बात की जाय वह तब तक अधूरी ही रहेगी जब तक उसमें भारतीय संस्कृति का समावेश न हो। यह इसलिए भी कि प्राचीन समय में भारत को विश्वगुरु का दर्जा अपनी संस्कृति आधारित ही था।चर्चा की शुरुआत भारतीय संस्कृति से ही होनी चाहिए।वह इसलिए की भारत और भारत की संस्कृति पुरातन है। किसी विदेशी विद्वान ने निःसंकोच इस बात को स्वीकार करते हुए कहा है कि जब दुनिया पढ़ना-लिखना सीख रही थी तब भारत में वेदों की रचना की जा चुकी थी। ऋग्वेद दुनिया का प्राचीनतम ग्रंथ है तथा देववाणी संस्कृत प्राचीनतम भाषा। सृष्टि के उद्भव और विकास की कहानियाँ अनेक वेदग्रंथों पुराणों में वर्णित हैं। भारतीय संस्कृति विज्ञान सम्मत है। पाश्चात्य देश भी इसको कमोबेश स्वीकार कर रहे हैं। भारतीय संस्कृति के विकास में महान ऋषि-मुनियों का अपना अनुभव रहा है। वे समाज हित के लिए अरण्यवासी थे।उनका यह जनहित के लिए किया गया प्रयास ही उनकी तपस्या कही गयी। आज की भाषा में हम चाहें तो इसे शोध कार्य भी कह सकते हैं। अपने इस शोध के उपरांत प्राप्त निष्कर्ष को उन्होंने दिनचर्या का हिस्सा बना दिया। जो आज तक चली आ रही है। यदि समाज में कोई कुरीति दिख रही है तो उसके पीछे कहीं न कहीं समयान्तराल में कुछ चीजों को भली भाँति न समझ पाना है। सबसे आग्रह है कि सामाजिक, धार्मिक भेदभावों पर ध्यान न देकर देश को समृद्ध करने के लिए सोचना चाहिए। ♦♦

अशोक लव की कविता

कविता सूरज है

जिन्हें कविता से डर लगता है
वे कविता की बातें नहीं करते
वे राजनीती के किस्सों की चासनी में
उंगलियाँ डुबाकर उन्हें चाटते हैं

वे उनकी बातें करते हैं
जिनका न धर्म है , न ईमान
जो कुर्सियों को खाते हैं
कुर्सियों को पीते हैं
कुर्सियों में मर जाते हैं
कुर्सियों में दफन हो जाते हैं

कविता न चासनी है, न कुर्सी
कविता सीढ़ी-सच्ची बात कहती है
वह दिन को दिन
और रात को रात कहती है
वह भूख को भूख
और मदिरा को मदिरा कहती है

उन्हें कष्ट है
कि कविता सच को सच
क्यों कहती है
उनकी कोशिश है कि
कोई भी कविता की बात न करे
कुछ सिरफिरे हैं कि
फिर भी कविता लिखते हैं
कविता को जीते हैं

सूरज के आगे अंधेरों की
कितनी ही चादरें तान लें
कर देता है सूरज उन्हें तार-तार
अपनी रोशिनी से
उन्हें शिकायत है कि
कविता सूरज क्यों है!

♦♦